डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए प्रथम वर्ष, हिंदी प्रतिष्ठा, प्रथम – पत्र, एवं बीए प्रथम खण्ड, सामान्य हिंदी, प्रथम पत्र

रीतिकालीन प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि

रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं –

1.रीति अथवा लक्षण – ग्रंथों की प्रधानता –

रीतिकालीन काव्य में रीति – ग्रंथों की रचना की प्रधानता है। रीति – ग्रंथ अथवा लक्षण – ग्रंथ से तात्पर्य उन रचनाओं से है, जिनमें रस, छंद, अलंकार एवं नायिका – भेद आदि के उदाहरण के रूप में कविताओं की रचना की जाती रही। डॉ. रामकुमार वर्मा ने इस काल में कलापक्ष की प्रधानता होने के कारण इस काल को कला – काल कहा। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीति – ग्रंथों की रचना की प्रधानता के कारण इस काल को 'रीतिकाल' नाम दिया। इस काल में रीति – ग्रंथों की रचना प्रमुखता से हुई।

2. श्रृंगार – भावना की प्रधानता –

भक्तिकालीन काव्य में भक्ति – भावना की प्रधानता थी और रीतिकाल में श्रृंगार – भावना की प्रधानता हो गई। श्रृंगार – रस की अधिकता के कारण ही आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस काल को 'श्रृंगारकाल' कहा। इस युग में श्रृंगार को ही काव्य का प्रमुख विषय बना दिया गया। डॉ. राजकिशोर सिंह के अनुसार

-"भक्ति – युग की दीप – शिखा का आलोक मंद होने पर हिंदी साहित्य के इतिहास के रंग – मंच पर नूपुरों की रुनझुन और कंचन की चकाचौंध व्याप्त हो उठी। कवियों की कविता वासनात्मक श्रृंगार और नारी की देह – यष्टि की रूप – सुषमा को उजागर करने लगी। उनकी कविता में न तो सूर, तुलसी जैसे कवियों की भक्ति की तन्मयता रही और न 'संतन को कहा सीकरी सो काम' जैसी निस्पृहता रही।"

3. नारी के प्रति विलासी दृष्टिकोण – रीतिकालीन कवियों में अधिकांश राज्याश्रित कवि थे। इनके काव्य का प्रमुख उद्देश्य था – राजा को प्रभावित करना, उसका मनोरंजन करना। यही कारण है कि अधिकांश रीतिकालीन कवियों की समस्त अंतश्चेतना सुरा, सुंदरी और सुराही के इर्द – गिर्द चक्कर लगा रही थी। स्त्री के रूप – रंग, हाव – भाव आदि के चित्रण को कविगण प्रमुखता दे रहे थे। निम्नलिखित दोहे में बिहारी ने नायिका की आँखों की सुंदरता का वर्णन किया है –

"अनियारे दीरघ दृगनु किती न तरुणी समान।

वह चितबन औरे कछू जिहि बस होत सुजान।।"

कवियों ने नायिकाओं की अवस्था आदि के आधार पर अनेक भेद बताया है और रीतिकालीन काव्य में उन सभी नायिकाओं का चित्रण किया है।

4. प्रकृति का उद्दीपन के रूप में चित्रण – रीतिकालीन काव्य में प्रकृति मुख्य विषय के रूप में बहुत कम चित्रित हुआ है। अधिकतर स्थानों पर प्रकृति का उद्दीपन के रूप में ही चित्रण किया गया है।

5. अलंकारों की प्रधानता – रीतिकालीन काव्य की यह विशेषता है कि उसमें कलापक्ष पर विशेष ध्यान दिया गया है, इसीलिए रीतिकालीन काव्य में अलंकारों की प्रधानता है।

6. लोकजीवन की उपेक्षा – रीतिकालीन अधिकांश कवि राज्याश्रय में रहते थे और राजा को प्रसन्न करने के लिए काव्य – रचना करते थे। इस तरह दरबारी कवियों द्वारा दरबारी काव्य लिखा जा रहा था और लोकजीवन की उपेक्षा हो रही थी।

7. अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन – रीतिकालीन काव्य में चमत्कार पर विशेष बल दिया गया है, यही कारण है कि अधिकांश वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण हैं। एक दोहे में नायिका के चेहरे की आभा को इतना बढ़ा – चढ़ाकर चित्रित किया गया है कि वह बिल्कुल ही कृत्रिम प्रतीत होता है। नायिका के चेहरे की आभा से उसके घर के आसपास सदैव पूर्णिमा रहती है, बिना पतरा देखे तिथि का पता नहीं चलता है –

“पत्रा ही तिथि पाइए वा घर के चहुँ पास।

नितप्रति पुण्योई रहै आनन ओप – उजास।।”

8. मुक्तक काव्यों की रचना – भक्तिकालीन काव्य में प्रबंध – काव्य की प्रधानता रही, परंतु रीतिकालीन काव्य में मुक्तक – काव्य की प्रधानता रही। ‘बिहारी सतसई’ इसका एक उपयुक्त उदाहरण है।

9. कला एवं भाषा की प्रौढ़ता – रीतिकालीन काव्य में कलापक्ष की प्रधानता रही। कवियों में कलाप्रदर्शन की होड़ लगी रहती थी। इसका सुपरिणाम यह हुआ कि रीतिकालीन काव्य कला एवं भाषा की प्रौढ़ता का काव्य बन सका।

10. राज्याश्रयता की प्रमुखता – भक्तिकालीन काव्य ईश्वर की भक्ति में डूबकर तन्मय भाव से काव्य – रचना कर रहे थे, परंतु रीतिकालीन कवि राजाओं के आश्रय में रहकर काव्य – रचना कर रहे थे।

11. भक्ति – नीति एवं वीर काव्यों की रचना - रीतिकाल में मुख्य रूप से श्रृंगार – प्रधान काव्य लिखा जा रहा था, परंतु दूसरी ओर भक्ति – नीति और वीर काव्यों की रचना भी हुई है। भक्ति एवं नीतिकाव्य लिखनेवाले प्रमुख कवि हैं – रहीम, वृन्द, गिरधर कविराय, बैताल, दीनदयाल गिरि आदि। रीतिकाल में वीर – रस की ओजस्वी कविता लिखने वाले प्रमुख कवि हैं – भूषण, लालकवि, सूदन, खुमान, बांकीदास हैं। इनके माध्यम से वीरकाव्य की परंपरा चलती रही है।

रीतिकाल के प्रमुख कवि हैं – केशवदास, चिंतामणि, सेनापति, मतिराम, भूषण, आचार्य देव, बिहारी, घनानंद, बोधा, भिखारीदास आदि।